GOLD STANDARD :

विश्व में धात्विक मुद्रा का सर्वाधिक प्रचलित रूप स्वर्ण-मान ही सदा रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक विश्व के केवल एक-आध देशों जैसे चीन एवं मैक्सिको को छोड़कर शेष सभी देशों में यह मान प्रचलित था।

वास्तव में स्वर्ण-मान उस मुद्रा-मान को कहते हैं जिसमें देश की मुद्रा का स्वर्ण के साथ एक निश्चित सम्बन्ध रहता है। प्रो० रॉबर्टसन के अनुसार "स्वर्ण-मान उस मौद्रिक व्यवस्था को कहते हैं जिसमें कोई देश अपनी मुद्रा के एक इकाई के मूल्य को स्वर्ण की एक निश्चित मात्रा के मूल्य के बराबर रखता है।" इसी प्रकार बेन्हम के अनुसार "कोई देश स्वर्ण-मान पर तभी रहता है जब उस देश की मुद्रा की एक इकाई की क्रय-शक्ति एक निश्चित वजन के स्वर्ण की क्रय-शक्ति के बराबर रहती है।"

इसी प्रकार स्पष्ट है कि स्वर्ण-मान में देश की मुद्रा का स्वर्ण के साथ एक निश्चित सम्बन्ध रहता है।

Scanned with CamScanner

Different type of Gold Standard

(1) Gold Currency Standard.

स्वर्ण-मान के जिस रूप का उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप के अधिकांश देशों में विकास तथा प्रचलन था उसे स्वर्ण-चलन मान ही कहते हैं। धात्विक मुद्रा का यह सर्वाधिक प्रमुख रूप था। स्वर्ण-चलन मान को स्वर्ण टंकन मान या पूर्ण स्वर्ण मान या स्वर्ण-चलन मान भी कहा जाता है।

Characteristics of the Gold Currency Standard:

(i) स्वर्ण के सिक्कों का प्रचलन,

(ii) स्वर्ण की मुफ्त ढलाई,

(iii) सरकार द्वारा स्वर्ण का क्रय-विक्रय,

(iv) स्वर्ण का स्वतंत्र रूप से आयात-निर्यात था।

(v) स्वर्ण ही मूल्य-मापन का कार्य करता था।

Scanned with CamScanner

स्वर्ण-चलन मान के निम्नलिखित प्रधान लाभ हैं:-

(i) जनता का विश्वास:- पूर्ण स्वर्ण-चलन मान में जनता का विश्वास बना रहता था क्योंकि इस मान में मुद्रा स्वर्ण की बनी हुई होती थी।

(ii) स्वर्ण-चलन मान में स्वयं संचालकता पायी जाती थी:- स्वर्ण चलन मान को संचालित करने के लिए सरकारी हस्त-क्षेप की आवश्यकता नहीं पड़ती। सरकार स्वर्ण-कोषों के सम्बन्ध में कुछ नियम बना देती थी जिसके अनुसार मुद्रा की मात्रा में स्वर्ण-कोषों के अनुसार, परिवर्तन होते रहता था। इस प्रकार केवल स्वर्ण मान के नियमों का पालन करते रहने से ही यह प्रणाली स्वतः संचालित होती थी।

(iii) स्वर्ण-चलन मान में देश में आंतरिक मूल्य-तल में स्थायित्व रहती थी:- इस मुद्रा की राशि स्वर्ण के परिमाण से नियमित होती थी और चूँकि स्वर्ण की मात्रा में बहुत कम परिवर्तन होता है, अतः मौद्रिक अधिकारी मुद्रा की राशि में इच्छानुसार परिवर्तन

नहीं कर सकते थे। इस प्रकार स्वर्ण-चलन मान में मुद्रा के आन्तरिक मूल्य में परिवर्तन की कोई सम्भावना नहीं रहती थी।

(iv) विदेशी विनिमय-दर में स्थायित्व :—
स्वर्ण-चलन-मान में देश की मुद्रा स्वर्ण की बनी हुई होती थी। साथ ही, स्वर्ण के आयात एवं निर्यात पर किसी प्रकार की रुकावट नहीं रहती थी। अतः इस पद्धति में विनिमय-दर में परिवर्तन केवल स्वर्ण के आयात एवं निर्यात के खर्च तक ही लीमित रहता था। इस प्रकार स्वर्ण-चलन मान में विदेशी विनिमय-दर प्रायः स्थायी रहती थी।

स्वर्ण-चलन-मान में निम्नांकित दोष भी थे :—

(i) यह मुद्रा-प्रणाली अत्यंत लोचहीन थी :—
स्वर्ण-चलन मान से देश की मुद्रा-व्यवस्था अधिक वैलोच हो जाती थी। इसमें मुद्रा की मात्रा पर आधारित रहती थी और चूँकि स्वर्ण की पूर्ति में बहुत कम परिवर्तन होता था, अतः इसमें आवश्यकतानुसार मुद्रा की राशि में परिवर्तन नहीं किया जा सकता था।

(ii) स्वर्ण का अत्यधिक अपव्यय :— इस प्रणाली में स्वर्ण के सिक्के वास्तविक चलन में

में रहते थे अतः स्वर्ण का एक बड़ा भाग मुद्रा के रूप में कार्य में ही लग जाता था जिससे दूसरे कार्य के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता। साथ ही, सोने के सिक्कों के प्रचलन में रहने से इनमें घिसावट आदि के फलस्वरूप बहुमूल्य धातुओं की हानि भी होती थी।

Scanned with CamScanner